10

आपा नहिं जाना तूने,...

(कविवर पण्डितश्री दौलतरामजी)

आपा नहिं जाना तूने, कैसा ज्ञानधारी रे॥टेक॥

देहाश्रित करि क्रिया आपको, मानत शिवमगचारी[१] रे॥1॥

निज-निवेद[२] बिन घोर परीषह, विफल कही जिनसारी रे॥2॥

शिव चाहे तो द्विविधि[३] कर्म तैं, कर निजपरनति न्यारी रे॥3॥

'दौलत' जिन निजभाव पिछान्यौ, तिन भवविपत विदारी रे॥4॥

१. मोक्षमार्गी; २. आत्मदेव; ३. द्रव्यकर्म-भावकर्म